Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 08/March/2024 IJRAW: 2024; 3(4):88-91 Accepted: 11/April/2024

कथक नृत्य का साहित्यिक अवलोकन

*[1]डॉ. जितेश गड़पायले

*[1]सहायक प्राध्यापक, कथक नृत्य विभाग, नृत्य संकाय, इं.क.सं.वि., खैरागढ, छत्तीसगढ, भारत।

सारांश

कवि या रचनाकार द्वारा भाषा, साहित्य एवं व्याकरण के माध्यम से जिन काव्यात्मक वाक्यों की रचना की जाती है, उन्हें कविता कहा जाता है तथा कविता को राग, ताल व लय में निबद्ध कर उन्हें 'कवित्त' का स्वरूप प्रदान किया जाता है। कवित्त के साथ अभिनय का समावेश कर इसे नृत्योपयोगी बनाया जाता है। इस प्रकार सामान्य शब्दों का नृत्यात्मक रूप में परिवर्तन एक निश्चित प्रक्रिया के अन्तर्गत की जाती है। नाट्यशास्त्रीय एवं काव्यशास्त्रीय ग्रंथों में इसे विशेष स्थान दिया गया है। जहाँ नाट्यशास्त्र एवं अभिनयदर्पणादि ग्रंथों में वाचिक अभिनय के अंतर्गत स्थान प्राप्त है, वहीं भावप्रकाशनम् एवं साहित्यदर्पण जैसे काव्यशास्त्रीय ग्रंथों में सौन्दर्य की उत्पत्ति काव्य से होना बताया गया है। प्राचीन आचार्यों ने काव्य के आधार पर ही सौन्दर्य की कल्पना की है। इस दृष्टि से वाचिक अभिनय के लिए व्याकरण शास्त्र, काव्यशास्त्र, संगीतशास्त्र और छन्दशास्त्र की जानकारी आवश्यक है। इस अभिनय का मुख्य उद्देश्य वाणी के विविध प्रयोग से है। नाट्यशास्त्र में वाणी के विविध प्रयोगों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। नाट्यशास्त्र में यह भी उल्लेख किया गया है, कि अवस्थाओं और स्थितियों के अनुसार हस्तादि आंगिक अभिनयों के अतिरिक्त वाचिक और सात्विक अभिनयों का भी प्रयोग करना चाहिए।

भाव व ताल का संयुक्त रूप कथक नृत्य शैली का एक अनोखा अंग है। यह रचना केवल कथक में ही प्रस्तुत की जाती है, जो मध्यलय में नाचा जाता है। इसमें ताल व अभिनय का सुन्दर संगम होने के साथ–साथ ताल व भाव का संयुक्त रूप एवं भावप्रधान अंग नाचा जाता है। कवित्त इस शब्द की नृत्य रचना का आधार कविता की कथा व छन्द होती है। मात्रिक व वर्णिक/वार्णिक छन्द में रचित कविताओं के छन्द को विभिन्न तालों में नृत्य करने की परम्परा रही है।

साहित्य में वर्णित आनन्द प्रधान एवं उद्देश्यपरक कविताओं, छन्द या पद्य का प्रयोग कर नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाना ही कवित्त कहलाता है। नृत्य में प्रयोगात्मक दृष्टिकोण से उपरोक्त साहित्य के पदों में नृत्य एवं ताल के बोलों का समावेश कर उसे समृद्ध किया जाता है। तत्पश्चात् उन्हीं ताल एवं नृत्य के बोल को मुद्रा विशेष चाल एवं भावाभिनय द्वारा सौन्दर्य वृद्धि कर उसे जन–रंजक बनाया जाता है। यह विशेष रूप से कथक नृत्य और साहित्य का एक अनूठा सजीव सम्बन्ध है।

मुख्य शब्दः व्याकरण के माध्यम से काव्यात्मक वाक्यो की रचना, शब्दों द्वारा नृत्यात्मक परिवर्तन, नाट्य शास्त्रीय एवं काव्यशास्त्रीय ग्रंथ में विशेष स्थान, आंगिक व सात्त्विक अभिनय, विभिन्न प्रकार के मुद्रा, चाल दृष्टिभेद द्वारा प्रस्तुत करना।

प्रस्तावना

कथक नृत्य की विषय–वस्तु की एक महत्त्वपूर्ण ईकाई 'कवित्त' है, जो 'कविता' शब्द का क्रियात्मक स्वरूप है। कवि या रचनाकार द्वारा भाषा, साहित्य एवं व्याकरण के माध्यम से जिन काव्यात्मक वाक्यों की रचना की जाती है, उन्हें कविता कहा जाता है तथा कविता को राग, ताल व लय में निबद्ध कर उन्हें 'कवित्त' का स्वरूप प्रदान किया जाता है। कवित्त के साथ अभिनय का समावेश कर इसे नृत्योपयोगी बनाया जाता है। इस प्रकार सामान्य शब्दों का नृत्यात्मक रूप में परिवर्तन एक निश्चित प्रक्रिया के अन्तर्गत की जाती है। नाट्यशास्त्रीय एवं काव्यशास्त्रीय ग्रंथों में इसे विशेष स्थान दिया गया है। जहाँ नाट्यशास्त्र

*Corresponding Author: डॉ. जितेश गड़पायले

एवं अभिनयदर्पणादि ग्रंथों में वाचिक अभिनय के अंतर्गत स्थान प्राप्त है, वहीं भावप्रकाशनम् एवं साहित्यदर्पण जैसे काव्यशास्त्रीय ग्रंथों में सौन्दर्य की उत्पत्ति काव्य से होना बताया गया है। प्राचीन आचार्यों ने काव्य के आधार पर ही सौन्दर्य की कल्पना की है। इस दृष्टि से वाचिक अभिनय के लिए व्याकरण शास्त्र, काव्यशास्त्र, संगीतशास्त्र और छन्दशास्त्र की जानकारी आवश्यक है। इस अभिनय का मुख्य उद्देश्य वाणी के विविध प्रयोग से है। नाट्यशास्त्र में वाणी के विविध प्रयोगों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। नाट्यशास्त्र में यह भी उल्लेख किया गया है, कि अवस्थाओं और स्थितियों के अनुसार हस्तादि आंगिक अभिनयों के अतिरिक्त वाचिक और सात्विक अभिनयों का भी प्रयोग करना चाहिए–'वाचा विरचितः काव्यनाटकादि तु वाचिकः। [1] किसी कवितांगी बोल को तालबद्ध करने की क्रिया को कवित्त कहा जाता है, लय का आभास देने के लिए हस्त के साथ पाद संचालन भी किया जाता है।[2] वस्तुतः वाचिक अभिनय का मुख्य सम्बन्ध शरीर से न होकर वाणी के विभिन्न प्रयोगों से है। इसी उद्देश्य से यहाँ वाणी के विभिन्न स्थानों एवं स्थितियों की विशेष चर्चा की गई है। शुद्ध, स्पष्ट, समुचित और सन्दर्भ समस्त उच्चारण विधियों का ज्ञान प्राप्त करने के अनन्तर ही नर्तक वाचिक अभिनय का सफल प्रदर्शन कर सकते हैं। आधुनिक विद्वानों ने भी नृत्य में कवित्त के प्रयोग संबंधी के परिपालन हेतु प्राचीन आचार्यों का ही अनुसरण किया है। 'नृत्योपयोगी कविताओं को विभिन्न प्रकार के मुद्राओं, चालों एवं दृष्टिभेदों द्वारा प्रस्तुत करने को ही कवित्त या छन्द कहते हैं, जो कि वाचिक अभिनय का एक प्रकार है।'[3]

भाव व ताल का संयुक्त रूप कथक नृत्य शैली का एक अनोखा अंग है। यह रचना केवल कथक में ही प्रस्तुत की जाती है, जो मध्यलय में नाचा जाता है। इसमें ताल व अभिनय का सुन्दर संगम होने के साथ–साथ ताल व भाव का संयुक्त रूप एवं भावप्रधान अंग नाचा जाता है। कवित्त इस शब्द की नृत्य रचना का आधार कविता की कथा व छन्द होती है। मात्रिक व वर्णिक/वार्णिक छन्द में रचित कविताओं के छन्द को विभिन्न तालों में नृत्य करने की परम्परा रही है। कविताओं के कथानक प्रायः संक्षिप्त रूप में होते हैं, जो कि विशेष परिस्थिति को इंगित करते हुए हस्त मुद्रा व पैरों से ताल प्रदर्शित करते हुए प्रस्तुत किया जाता है। [4]

साहित्य में वर्णित आनन्द प्रधान एवं उद्देश्यपरक कविताओं, छन्द या पद्य का प्रयोग कर नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाना ही कवित्त कहलाता है। कवित्त विशुद्धतः नृत्य होता है, जिसमें नर्तक द्वारा शब्दों के अर्थों का प्रकाशन मुद्राओं द्वारा किया जाता है। [5] नृत्य में प्रयोगात्मक दृष्टिकोण से उपरोक्त साहित्य के पदों में नृत्य एवं ताल के बोलों का समावेश कर उसे समृद्ध किया जाता है।

तत्पश्चात् उन्हीं ताल एवं नृत्य के बोल को मुद्रा विशेष चाल एवं भावाभिनय द्वारा सौन्दर्य वृद्धि कर उसे जन–रंजक बनाया जाता है। यह विशेष रूप से कथक नृत्य और साहित्य का एक अनूठा सजीव सम्बन्ध है। किसी कविता अथवा पद को नृत्य के बोलों के साथ लय और ताल में बांधकर उसके प्रत्येक शब्द को उसी प्रकार भाव बताते हुए प्रदर्शित करना कवित्त कहलाता है। [6]

कथक नृत्य में विभिन्न तालों एवं जाति पर भी आधारित कवित्त या छन्द प्रस्तुत किये जाते हैं। गुरु लच्छू महाराज द्वारा रचित निम्नलिखित कवित्त तिस्त्र जाति का एक अनुपम उदाहरण है। निम्नलिखित कवित्त में गुरु लच्छू महाराज द्वारा रचित है इसमें गीत के बोलों के साथ उसके अनुकूल नृत्य और तबले के बोलों का सुंदर प्रयोग हुआ है–

'कवित्त पं.लच्छू महाराज'[7]

माख	ऽन	खात	ऽचु	राऽ	येचु	राय	केऽ	ढीठ	ऽब	डोहै	ऽये	तेरो	ऽक	न्हैऽ	याऽ
x				2				0				3			
काहू	केऽ	खैंच	ऽत	जाये	ऽके	चून	ऽर	बाल	ऽगो	पाल	ऽगो	पाल	ऽक	हैऽ	याऽ
x				2				0				3			
ठाड़	ऽक	दंब	ऽके	छांव	ऽत	लेर	ऽस	भीनि	ऽब	जाव	ऽत	बाँसु	ऽरी	दैऽ	याऽ
x				2				0				3			
कासे	ऽक	हूकि	ऽत	जाऊँ	ऽस	खीजि	ऽत	जाऊं	ऽउ	तवो	ऽच	राव	ऽत	गैऽ	याऽ
x				2				0				3			
हाऽ	हाऽ	हाऽ	दैऽ	याऽ	ऽऽ	हाऽ	हाऽ	हाऽ	दैऽ	याऽ	ऽऽ	हाऽ	हाऽ	हाऽ	दैऽ
x				2				0				3			
या															
x															

कवित्त दो प्रकार के होते हैं–ताल में बंधे हुए कवित्त को कवित्त या कविता तोड़ा कहते हैं। उसमें शब्दों पर भाव दिखाया जाता है। दूसरे प्रकार में ताल की बंदिश रहित कवित्त दोहे के समान होते हैं, जिनको दोहे के समान गाकर उस पर खड़े रहकर या बैठकर भाव दिखाया जाता है। [8] कथक के महान गुरु व नर्तक रीतिकालीन दोहों में नृत्य–प्रदर्शन करते थे। यह अधिकांशतः ताल में निबद्ध न होकर अभिनय के अनुकूल गति में गाकर किया जाता था। उदाहरणार्थ–

सूर्य छिपे अदरी बदरी।
चन्द्र छिपे जो अमावस आये।
भोर भई पर चोर छिपे।
आरे मोर छिपे ऋतु फागुन आये।
घूँघट डार कियो कितनो पर।
चंचल नैन छिपे न छिपाये।

इसी प्रकार जब किसी कविता के शब्दों को नृत्य, तबला, पखावज या परमेलु के बोलों के साथ मिलाकर एक

ताल–प्रबंध या बंदिश के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो इसे कवित्त के शब्दों की प्रधानता के कारण कवित्त कहकर पुकारा जाता है। कवित्त एक छन्द का नाम है।[9] कवित्त या छन्द की निजीगत विशेषता गेयात्मकता एवं भावाभिनयात्मकता के माध्यम से दक्ष गुरुओं या कलाकारों द्वारा बड़े से बड़े कथानकों का प्रदर्शन भी संभव है।

कवित्त में गीत के साथ नृत्य के बोल भी रहते हैं। इसमें निहित भाव का प्रदर्शन करना ही नृत्य का प्रधान कार्य है। [10] रचित पौराणिक कथानक पर आधारित निम्नलिखित ऐसे कवित्त लय, ताल व मुद्राओं के साथ एक पूरे कथानक को प्रस्तुत करने के लिए बहुत उपयुक्त होते हैं। तकनीकी रूप से छन्दोबद्ध पद्य समूह, जो कि तालबद्ध बोल पर आधारित होते हैं। कवित्त कथक नृत्य में शब्दयुक्त बंदिशें हैं, जो दादरा चाल (तिगुन) अथवा चतुरस्र (चार मात्रा) की लय में प्रयुक्त होते हैं। जब कोई पद या कविता लय और लयबद्ध करके नृत्य में उसके भाव प्रदर्शित किये जाने की नृत्यात्मक क्रिया कवित्त कहलाती है। [11] प्रयुक्त कवित्त को विविध विषयों पर आधारित कर वर्णन किया जाता है, जैसे–राधा–कृष्ण, देवी–देवताओं का वर्णन, पौराणिक गाथा, ऋतु वर्णन, नायिका वर्णन आदि। साहित्य व नृत्य के बोलों पर आधारित बंदिश अर्थात् कवित्त में छन्द लय की प्रमुखता के साथ प्रयुक्त साहित्य देवी–देवता या पौराणिक प्रसंगों पर आधारित होता है। [12] 'कवित्त की रचना छन्दबद्ध होती है, जिसमें किसी भी विषय, जैसे–राधा–कृष्ण, गोपियाँ, मेघ, बसन्त आदि अन्य विषयों पर कवित्त रचकर नृत्य प्रदर्शन किया जाता है। [13] उदाहरणार्थ–कालिया दमन (मिस्त्र जाति) [14]

गँऽद	खेऽलत	हिरत	फिरतत	करत	छलबल	काऽरी	देह मेंऽ
x				2			
कूऽद	गएऽऽ	माऽर	गोऽताऽ	नाऽग	जीऽकेऽ	पाऽस	जब तब
0				3			
पहुंच	गयेऽऽ	नाऽग	न्योंऽसे	कहन	लाऽगेउ	ठाओ	नाऽग
x				2			
देऽव	कोऽऽऽ	नाऽग	नीऽतब	चमक	उऽठींऽ	तुम हो	बाऽल गो
0				3			
पाल	लाऽला	हमको	आऽत है	तरस	तुमपर	हंसत	हंसतऽ
x				2			
कृष्ण	बोऽलेऽ	नाऽग	नाऽथन	आऽयो	मेंऽऽऽ	नाऽग	जीऽने
0				3			
उठके	देऽखाऽ	क्रोऽध	सेऽमाऽ	रीऽफु	काऽरऽ	सनन	ननफुऽ
x				2			
काऽर	कीऽजब	गूंऽज	धवनिऽ	छाऽग	ईऽऽऽ	कृष्ण	जीऽजब
0				3			
नीऽल	भरनन	भए ल	गैऽदौऽ	युऽद्ध	करनेऽ	झटक	झटझट
x				2			
पटक	पटपट	नाऽग	जीऽकोऽ	नाऽथ	लीऽयोऽ	नाऽथ	सेऽजब
0				3			
खींऽच	करलेऽ	आऽए	जमनाऽ	धाऽर	मेंऽऽऽ	फनन	ननपर
x				2			
चरन	ननधर	नादिगदिग	दिगदिगदिगदिग	थो दिगदिग	दिगदिगदिगदिग	त्रामत	तत्तथई
0				3			
त्रामत	तत्तथई	निरत	तत्तत्	करन	लाऽगेऽ	सांऽव	रेऽगोऽ
x				2			
पाऽल	लाऽलाऽ	थरर	रररर	नाऽग	नीऽयेंऽ	कांऽप	उऽठींऽ
0				3			
चरन	ननपर	पर प्र	भूऽकेऽ	विनती	कर कह	नेऽल	गीऽऽऽ
x				2			
अवहूँ	जाऽनूँ	तुम हो	कृष्णव	ताऽर	प्रभुजीऽ	हमकी	देऽओ सु
0				3			
हाऽग	लाऽलाऽ	नाऽऽग	न्यों कीऽ	टेंऽर	सुनकर	नाऽग	जीऽकोऽ
x				2			
देऽदि	योऽऽऽ	भूऽमि	बृजमेंऽ	धूऽम	मच गई	कृष्ण	जय जय
0				3			
काऽर	मचगई	नऽन्द	बाऽबाऽ	मगन	भए जब	माँऽय	शोऽधाऽ
x				2			
करत	आऽरती	मोऽति	यऽन के	थाऽल	भर भर	देऽत	नाऽराऽ
0				3			
यऽण	कोऽऽऽ	गुण प्र	भूऽकेऽ	गाऽए	गाऽए के	नाऽचे	नाऽच के
x				2			
मगन	भए भए	मगन	भए भए	मगन	भए भए	नाऽरा	यण जब
0				3			
मगन	भए भए	मगन	भए भए	मगन	भए भए	नाऽरा	यण जब
x				2			
मगन	भए भए	मगन	भए भए	मगन	भए भए	नाऽरा	यण जब
0				3			
आ							
x							

ब्रजभाषा पर आधारित छन्द कथक नृत्य में भाव पक्ष के अभिन्न अंग हैं। एक से एक सरस छन्दों की रचना यही छन्द जो सामान्यतः कविता के ही रूप हैं, जो आगे चलकर कथक नृत्य में कवित्त के रूप में परिणित हो गये। प्रयोगात्मक दृष्टिकोण से मुख्य गीत, भजन, ठुमरी आदि के प्रारंभ में ही उसकी भूमिका के रूप में कोई कवित्त गाकर अभिनय किया जाए, जो कि मुख्य गीत हेतु उपयुक्त वातावरण का निर्माण करने में सहायक सिद्ध हो।

निष्कर्ष

मूलतः कविताओं में सार्थक शब्द विशिष्ट होते हैं, किन्तु कथक नृत्य में प्रयोग एवं रचनात्मकता की दृष्टि से प्रयुक्त

किये जाने वाले कवित्त की रचनाओं में सार्थक और निरर्थक शब्दों का प्रयोग रचना के रचनात्मक सौन्दर्य को लक्षित करने में सहायक सिद्ध होता है। छन्द कवित्त रचना क्रिया मुख्यतः सार्थक और निरर्थक शब्दों की क्षमता पर आधारित होती है। इन्हीं शब्दों के आधार पर रचना या निर्मित प्रबंध का नाम किसी भी विषय पर निर्धारित किया जाता है। सार्थक बोल से ही स्पष्ट है, कि उन बोलों को पढ़ने से ही उनके भाव स्पष्ट हों, जो स्थान विशेष पर आधारित होती है। वहीं दूसरी ओर निरर्थक बोलों के पढ़ने से भाव स्पष्ट नहीं होते, परन्तु स्थिति के अनुसार प्रयोग किये जाते हैं। साथ–ही–साथ इससे गीत व भाव की रंजकता में भी वृद्धि होती है। इस प्रकार कथक नृत्य में कवित्त की विविध प्रकार से उपयोगिता है, जो कहीं–न–कहीं कथा प्रसंगों को जोड़ते हुए उन्हें जीवन्त बनाने के साथ–साथ गति प्रदान करता है। सार्थक शब्दों पर आधारित नृत्य क्रिया सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम है। इसी प्रकार कथानक में सौन्दर्यवृद्धि करने के लिए नृत्त के निरर्थक बोल, जो कि कविता के छन्द से मिलते–जुलते हों, का प्रयोग भी किया जाता है, जो प्रस्तुतिकरण में कवित्त की रचनात्मकता का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता प्रतीत होता है। फलतः कथक नृत्य में कवित्त का महत्वपूर्ण स्थान परिलक्षित होता है। यह साहित्य और नृत्य दोनों की दृष्टि से कथक नृत्य की प्रस्तुति को समृद्ध करता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. वाचस्पति गैरोला, भारतीय नाट्य परम्परा और अभिनयदर्पण, पृ. 200
2. डॉ.गीता रघुवीर, कथक के प्राचीन नृत्तांग, पृ. 77
3. मांडवी सिंह, भारतीय परम्परा के कथक नृत्य, पृ. 207
4. संगीत पत्रिका, मई 1981, कथक नृत्य जयपुर घराने के कवित, रानी कर्णा, पृ. 28
5. साक्षात्कार–वरिष्ठ कथक नृत्यांगना एवं गुरु सुश्री प्रेरणा श्रीमाली, 10–14 अक्टूबर, 2016. इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़
6. डॉ. प्रेम दवे, कथक नृत्य परम्परा, पृ.224
7. मांडवी सिंह, कथक परम्परा में गुरु लच्छू महाराज, पृ. 155–156
8. डॉ.श्वेनी पण्ड्या दलाल, नृत्यबोध, भाग–2, पृ.148
9. डॉ. पुरु दाधीच, कथक नृत्य शिक्षा, भाग–2, पृ.147
10. डॉ. शरच्चन्द्र श्रीधर, परांजपे, संगीतबोध, पृ. 177
11. विक्रम सिंह नटवरी कथक नृत्य माला, पृ.64
12. शिखा खरे, कथक सौन्दर्यात्मक शास्त्रीय नृत्य, पृ. 24
13. कुश्वेता शुक्ला, रास की विभिन्न धाराओं का कथक से अन्तर्सम्बन्ध, शोध–प्रबंध, पृ.208
14. पं. तीरथराम आजाद, कथक दर्पण, पृ.297–298।